प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने "स्नातक स्तर के छात्रों के आकांक्षा स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" विषय पर शिक्षा-शास्त्र में पी-एच. डी. उपाधि हेतु अपना शोध प्रबन्ध मेरे निर्देशन में पूरा किया है। प्रस्तुत शोध-कार्य श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव के अनुशीलन एवं परिश्रम पर आधारित तथा यह इनका मौलिक योगदान है।

प्राचार्य 23/12/03

सह-निर्देशक

डॉ. मातांबर मिश्र

निर्देशिका

डॉ. श्रीमती सन्ध्या अग्रवाल

प्राक्थन

शिक्षा न केवल सामाजिक मूल्यों व आदर्शो का निर्माण करती है, अपितु उन पर चलने व दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करने के लिए प्रयास करती है। शिक्षा तथा समाज एक दूसरे से इस प्रकार सम्बन्धित हैं कि मानव अपने जीवन में सफलता के लिए दोनों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करता है। समाज शिक्षा को तथा शिक्षा समाज को प्रभावित करती है। सामाजिक मान्यताओं व आदर्शो तथा आकांक्षाओं के आधार पर ही शिक्षा की रूप-रेखा तैयार होती है। तथा समाज के नये आदर्श रीति-रिवाज एवं परम्पराओं को लेकर शिक्षा आगे बढ़ती है।

मानव प्रतिभा हमारा सबसे बड़ा प्राकृतिक साधन है। इसके संस्करण एवं विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। जब भी मानव प्रतिभा का अपव्यय होता है तब प्रत्येक वो लाभ से वंचित होना पड़ता है। जब इसका विधिवत विकास होता है तो प्रत्येक लाभान्वित होता है। वर्तमान जटिल समाज में हमारा प्राथमिक कार्य मानव प्रतिभा की उचित पहचान होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रतिमा के अनुसार समाज में समायोजित किया जाना चाहिए एवं उसे अपने आन्तरिक साधनों के विकास में सहायता दी जानी चाहिए ताकि वह जीवन की कठिनाईयों से गौरव के साथ संघर्ष कर सके। विद्यार्थी अपना लक्ष्य उच्च शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा पर केन्द्रित करते है जिसकी पूर्ति के लिए उनकी आर्थिक व शैक्षिक निष्पत्ति नही होती है। फलस्वरूप वह अपने आपकों स्वप्न लोक में पाते है।

अतः यह स्पष्ट है कि व्यक्ति के शैक्षिक आकांक्षा के समायोजन के लिए वल देना आवश्यक है। जो कि उसकी आर्थिक-सामाजिक स्तर व सम्प्राप्ति के अनुकूल होनी चाहिए। वर्तमान में स्कूल जाने वाले किशोर भविष्य इन किशोरो पर निर्भर करेगा । किशोर अपने जीवन में घर, परिवार, स्वास्थ्य, विद्यालय, शारीरिक व सामाजिक समस्याओं से सघर्ष करता है। वर्तमान में भी शोध के क्षेत्र में छात्रों के आकांक्षा स्तर एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन की आवश्यकता बनी है। अतः शोधकर्ता के मन में "स्नातक स्तर के छात्रों के आकांक्षा स्तर एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" विषय पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

प्रस्तुत शोध अध्ययन डॉ. सन्ध्या अग्रवाल रीडर अग्रसेन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी के सक्रिय व कुशल मार्ग-निर्देशन में सम्पन्न हुआ। श्रद्धेय श्रीमती अग्रवाल जी ने जो स्नेह, सहानुभूति एवं ज्ञान प्रदान किया उसके लिए मैं उन्हें अपना आभार प्रकट करता हूँ।

मैं राजा श्रीकृष्णदत्त महाविद्यालय जौनपुर के डॉ. मातबर मिश्र का आभारी हूँ जिसके कुशल सह-निर्देशन में मेरा शोधकार्य पूर्णता को प्राप्त हुआ। इस महाविद्यालय के डॉ. घनश्याम ओझा पूर्व प्रचार्य का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोधकार्य हेतु अपना महाविद्यालय उपलब्ध किया एवं पुस्तकों के अध्ययन भी सुविधा प्रदान की।

मै शिक्षक प्रशिक्षण विभाग के डॉ. जनार्दन प्रसाद शुक्ल, रीडर एवं डॉ. जिलेदार मिश्र प्राचार्य, राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर एवं डॉ. मयानन्द उपाध्याय विभागध्यक्ष शिक्षा-शास्त्र जिनके सहयोग के बिना प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूर्ण होने में कठिन प्रतीत होता।

मैं अपने श्रद्धेय पिता श्री हरिशंकर श्रीवास्तव माता श्रीमती सुशीला देवी के चरणों में नतमस्तक हूँ, जिनके सहयोग एवं निरन्तर प्रेरणा के फलस्परूप यह शोध प्रबन्ध पूर्णता को प्राप्त हुआ। मैं अपनी पत्नी श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव का भी विशेष आभारी हूँ जिनकी सहायता से यह कार्य पूर्ण हो सका।

मैं अपने मित्र डॉ. राधेकृष्ण ओझा के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के फलस्परूप यह शोधकार्य सम्पन्न करने में मदद मिली।

मैं उन सभी लेखकों शोधकर्ताओं, प्रकाशकों तथा महाविद्यालय के उन सभी विद्यार्थियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने आकड़ा संग्रह में सम्मिलित हुए।

अन्त में मैं कम्प्यूटर टंकण श्री राजेश महेश्वरी/ श्री रतन कुमार श्रीवास्तव के प्रति अपना आभार ज्ञापित करता हूँ जिनके सहयोग के बिना प्रस्तुत रूप देना सम्भव ही न था।

प्रदीप कुमार श्रीवास्तव

शोधकर्ता